International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संथाल जनजाति की पारंपरिक कलाओं में लोक संस्कृति की झलक

नंदन चन्द्र पानी
शोधार्थी, शिक्षा विभाग,
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र 442001
kumarnandan668@gmail.com
डॉ. हरीश पाण्डेय
सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग,
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र 442001
harishjobvns@gmail.com

सारांश :

संथाल जनजाति भारत के आदिवासी समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान और परंपराओं के लिए जानी जाती है। उनकी पारंपरिक कलाएँ उनकी लोक संस्कृति की गहरी झलक प्रस्तुत करती हैं। भारत की आदिवासी परंपराओं में संथाल जनजाति का सांस्कृतिक और कलात्मक योगदान कई मायनों में महत्वपूर्ण है। उनकी कला और संस्कृति उनके दैनिक जीवन, धार्मिक मान्यताओं, और सामूहिक मूल्यों का सजीव प्रतिबिंब है। इनकी पारंपरिक कलाएँ न केवल उनकी पहचान का हिस्सा हैं, बल्कि उनके समाज, इतिहास, और पर्यावरण के साथ गहरे संबंध को भी दर्शाती हैं। संथाल जनजाति की कला और संस्कृति उनके सामाजिक जीवन, धार्मिक विश्वासों, और सामूहिकता का प्रतीक है। उनकी कलाएँ और परंपराएँ न केवल सौंदर्यबोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि इनमें उनका गहरा आध्यात्मिक दृष्टिकोण, प्रकृति प्रेम, और सामाजिक संरचना के सुक्ष्म संदर्भ भी समाहित है। संथाल जनजाति के लोग अपनी कला के माध्यम से अपने जीवन की कहानी, संघर्ष, और प्रकृति के साथ सामंजस्य को चित्रित करते हैं। उनके त्योहार, अनुष्ठान, और सांस्कृतिक गतिविधियाँ उनके सामाजिक और धार्मिक जीवन का अभिन्न हिस्सा है जो विविध कला रुपों के विकास की उर्वर भूमि प्रदान करती है। संथाल कला न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि यह उनके जीवन के प्रत्येक पहलू से जुड़ी है। यह उनके पूर्वजों की परंपराओं को जीवित रखने के माध्यम के साथ-साथ उनके पीढ़िगत देशज ज्ञान के हस्तांतरण व संरक्षण का सामाजिक संदेश प्रेषित करती है। यह शोध आलेख संथाल जनजाति की लोक कला, उनके विभिन्न कलात्मक स्वरूपों और पारंपरिक कला व पारंपरिक ज्ञान के उनके जीवन में महत्व पर गहन दृष्टि प्रदान करते हुए संथाली मान्यताओं, उनके सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के शुक्ष्म अनुभूतियों, और उनकी लोक संस्कृति को संरक्षित करने की आवश्यकता पर प्रकाश डालती है।

मुख्य बिंदु : संथाल जनजाति, पारंपरिक कलाएं, पारंपरिक ज्ञान, लोक संस्कृति, भाषा, सौंदर्यबोध,

अध्ययन की पृष्ठभूमि :

संथाल जनजाति भारत की सबसे प्रमुख एवं प्राचीन आदिवासी जनजातियों में से एक है जो अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान, समृद्ध परंपराओं, कलात्मक अभिव्यक्तियों तथा प्राकृतिक जीवन शैली के लिए जानी जाती है। उनकी सांस्कृतिक और सामाजिक संरचना भारत के आदिवासी समाज का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करती है। यह जनजाति मुख्यतः झारखंड, पश्चिम बंगाल, बिहार, उड़ीसा और असम राज्य में निवासरत है जो अपनी कला, संस्कृति एवं भाषाई विशेषताओं के साथ गांव में रहने वाली शांतिप्रिय कृषक जनजाति है। संथाल जनजाति अपनी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विशिष्ट सांस्कृतिक अभिमूल्यों, पारंपरिक मान्यताओं, ज्ञानात्मक पद्धतियों एवं सामुदायिक सहभागिता द्वारा अपनी दैनिक आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति हेतु विविध कलाओं एवं पद्धतियों तथा कृषि के तरीके, विभिन्न वाद्य यंत्रों का निर्माण, विभिन्न प्राकृतिक स्वरूप जैसे- जंगल, झरने, नदी, पहाड़ तथा वन पशु-पक्षियों से जुड़े पारंपरिक गीतों का निर्माण, समुदायिकता व पारंपरिकता के व्यवहार रूपों में नृत्य शैलियों का निर्माण तथा बड़े बुजुर्गों के आशीर्वाद व संरक्षण स्थल के रूप में गृह निर्माण आदि कला रूपों के पारंपरिक खोजकर्ता एवं उपासक के रूप में प्रतिस्थापित हैं।

लोक शब्द जाति, वर्ग, वर्ण-धर्म, संप्रदाय, नगर-ग्राम, शिक्षित-अशिक्षित, धनी-निर्धन और विकसित व अविकसित भेदों से अलग हटकर एक भिन्न व्यवहार में आता है। इस कला में व्यक्तिक भाव, तर्क व नियमों से हटकर एक स्वतंत्र भाव से कार्य होता है। लोग का कृतित्व संपूर्ण मानव के अभ्युदय के लिए होता है। लोक कला मानवीय समूह की सहज अभिव्यक्ति का ही एक स्वरूप है। यह कला मानव सभ्यता के अभ्युदय के साथ विकसित हुई, साथ ही धार्मिक विश्वासों तथा आस्थाओं के नियमन में पली है जिसका संदर्भ वैदिक साहित्य में प्राप्त होते हैं (पाण्डेय, 2002)। लोक कला के अलावा भी परंपरागत कला का एक अलग स्वरूप है जो अलग-अलग जनजातियों और दूर दराज के गांव में प्रचलित है जिसे हम जनजातीय कला के रूप में जानते हैं। दूसरे शब्दों में कहे तो जनजातीय कलाएं वे कला रूप हैं जिसका सृजन विशिष्ट भौगोलिक परिस्थितियों में रहते हुए जनजातीय समुदायों द्वारा अपने पीढ़ीगत अनुभव और सामुदायिक आवश्यकताओं के सापेक्ष अपनी कल्पना एवं जीवन दृष्टि की व्याख्या के मध्यम स्वरूप में हुआ। ये कलाएं उनके जीवन के एक वर्ग के रूप में सृजित होकर पीढियों से व्यवहृत व परीक्षित होकर अपने मूल रूपों में आमूल चूल परिवर्तन के साथ अपने आदिम स्वरूप को बनाने में सक्षम रही है जिसमें उनके इतिहास, संघर्ष व जिजीविषा की झांकियां परिलक्षित होती है। ये कलाएं जितनी व्यक्तिक व सामुदायिक है उतनी ही क्षेत्रीय, प्रांतीय एवं राष्ट्रीय (भारतीय) भी है जिसका सृजन हजारों वर्षों में विभिन्न समुदायों में विभिन्न प्रयत्नों द्वारा हुआ है।

भारत की लोक एवं जनजातीय कलाएं बहुत ही पारंपरिक और साधारण होने पर भी इतनी सजीव और प्रभावशाली है, उनसे देश की समृद्ध विरासत का अनुभव स्वतः ही हो जाता है। आधुनिक कला से हटकर जनजातीय कला की विविधताओं पर नजर डाले तो रचनाशीलता, कलात्मक अभिव्यक्ति एवं पारंपरिकता का अनोखा संगम देखने को मिलता है। यह जनजातीय कलाएं समाज की प्रमुख धारा से अलग संस्कृति के पैमानों पर बेहद संपन्न नजर आती है, इसलिए यह कहना गलत ना होगा कि कला और संस्कृति के मामले में यह समुदाय आधुनिक प्रगतिशील समाज की अपेक्षा पहले से कम विकसित नहीं रहे हैं।

संथाल समाज में कल की प्रचुरता का आधार उनकी सामूहिक वृत्ति एवं उनकी सांस्कृतिक मान्यताएं हैं जो उनके दैनिक जीवन के सभी क्षेत्रों में विशेषतः मनोरंजन, पूजा-पद्धति, संस्कार आयोजनों एवं प्राकृतिक पर्व आदि में न केवल परिलक्षित होती है अपितु इनसे संबंधित क्रियाकलापों को जनजातीय पटल पर परिभाषित भी करती है। अतः सांस्कृतिक समुदाय के रूप में संथाल जनजाति की कला तथा उनके प्रेरक प्रतिरूपों का अध्ययन, जनजातीय

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

देशज ज्ञान के संरक्षण व हस्तानांतरण की आवश्यक आवश्यकता को भी मुखरित करता है। संथाली देशज ज्ञान, कला, भाषा व संस्कृति में किए गए अध्ययन यथा- आदि संदर्भ इस क्षेत्र में अध्ययन की आवश्यकता को तथ्य परक आधार प्रदान करते हैं जिस हेतु सांस्कृतिक विरासत की रक्षा, कलात्मक प्रतिरूपों की व्याख्या तथा संथाली जनजीवन की विशिष्टता को जानने तथा इसके अध्ययन की आवश्यकता को विशेष रूप से प्रस्तुत करता है।

संथाल जनजाति में कला, संस्कृति और धार्मिक विश्वास एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। उनकी पारंपरिक कलाएं उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा है जो संथाली सामाजिक संरचना, विश्वास प्रणाली एवं प्राकृतिक पर्यावरण के साथ उनके सामंजस्य को दर्शाती है। संथाल समुदाय में सामूहिकता और समानता की केंद्रियता रही है और यही मूल्य उनकी कला और सांस्कृतिक परंपराओं में भी परिलक्षित होती है। संथाल जनजाति में प्रचलित विविध कलारूपों जिनमे उनकी परंपरा एवं संस्कृति के मानक संदर्भों का प्रत्यक्षण होता है, चित्रा-1 में प्रस्तुत आयाम के माध्यम से समझा जा सकते हैं।

चित्र-1 : संथाल जनजाति की विविध कलाएं

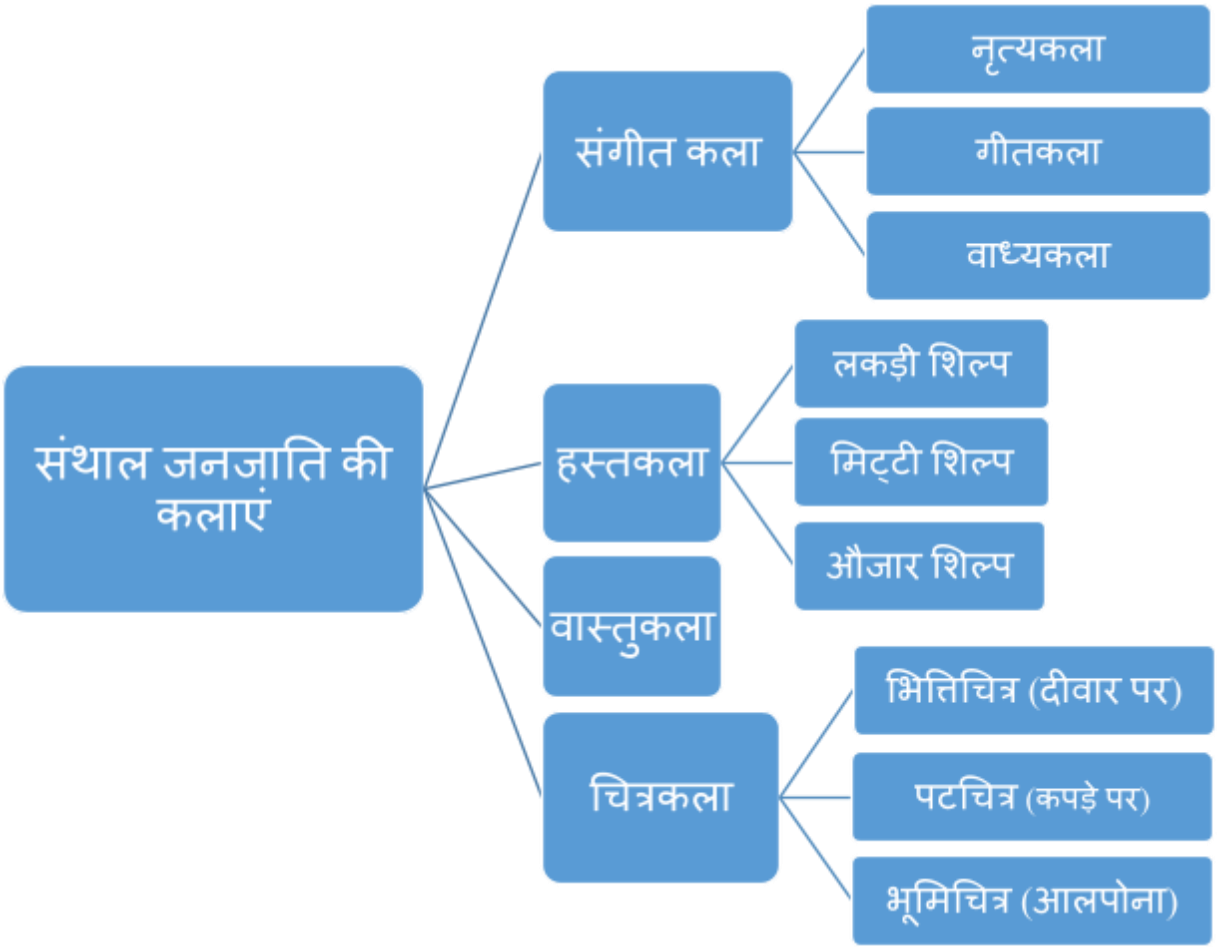

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संगीतकला :

संथाल समुदाय के लोकगीतों में व्याप्त विषय मुख्यतः जनजीवन एवं उनकी जीवनशैली के सुक्ष्म ताने बाने यथा-परिस्थितिजन्य अनुभूतियां, मनोवेग, क्रिया-व्यापार, तात्विक संबंध आदि पर केंद्रित है। जिसमें देश-काल का अतिक्रमण, मानव चेतना की सुषुप्ति व जागृती का विश्लेषण तथा धर्म, नीति व आध्यात्मिका का स्वभाविक चित्रण सहज दृष्टांतो के रूप में प्रत्यक्षीत होती है (पाण्डेय, 2002)। संथाली लोकगीतों के विविध प्रकार संथाल समुदाय में प्रचलित है जिसमें प्रमुख गीतों को निम्न चित्र में देखा जा सकता है:-

चित्र-1 *संथाली लोक गीतों का प्रसंग अनुकूल विभाजन*

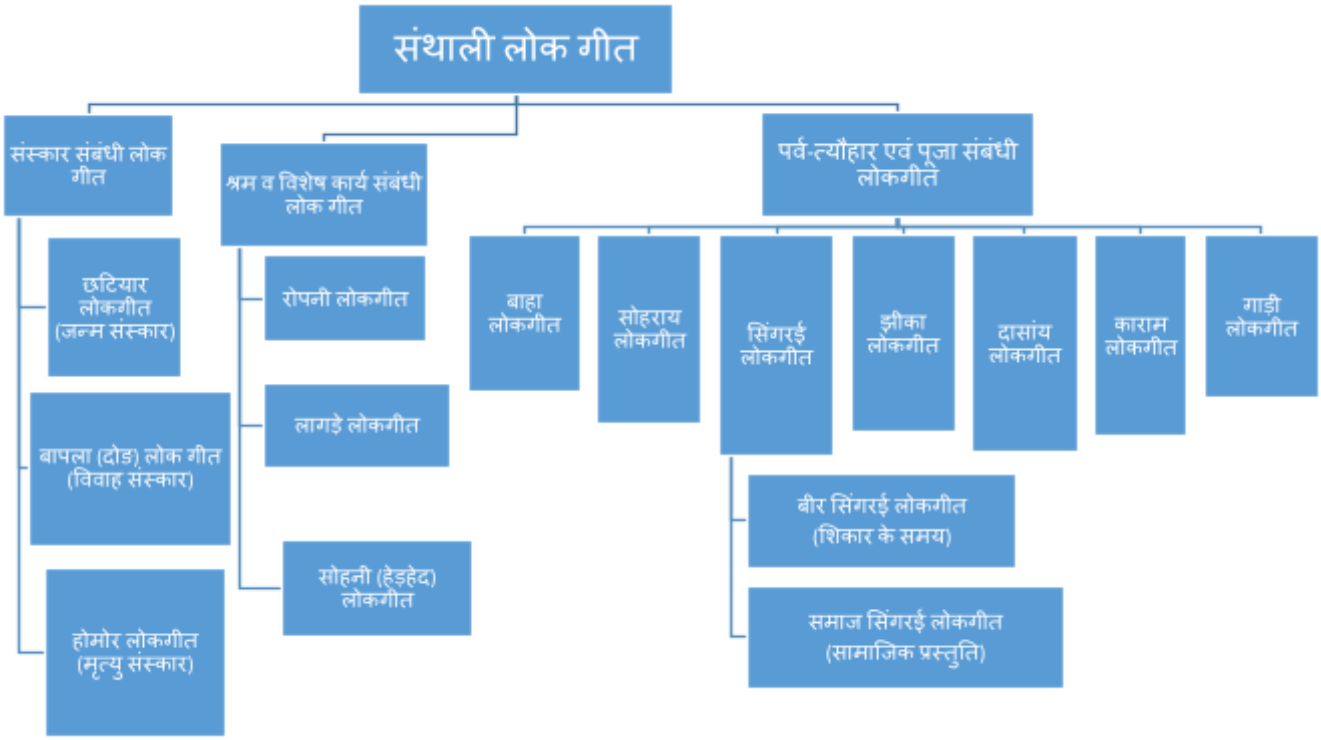

श्रोत- क्षेत्रीय शोध कार्य 2024

(हेम्ब्रम, 2020; मुर्मू, 2023)

संथाल जनजाति में प्रचलित देशज ज्ञान के विभिन्न संदर्भों को गीतों के माध्यम से दैनिक जीवन में प्रयुक्त समस्त क्रियाकलापों के प्रत्यक्षण तथा जीवनसत्व की अभिव्यक्ति हेतु समुदाय के समस्त सदस्य यथा बच्चे, युवक एवं वृद्ध आदि सभी वर्ग सम्मिलित रूप से गीत-नृत्य का परिवेशन कर न केवल अपने जातीय ज्ञान को संरक्षित करते हैं बल्कि विभिन्न आखड़ों व आयोजनो के माध्यम से अगली पीढ़ी तक हस्तांतरित भी करते हैं। गीतों में सन्निहित विशिष्ट ज्ञान जो उनके अस्तित्व निर्मित, ईश्वरवाद, ज्ञान-विज्ञान, जीवन संरचना, दैनिक कर्म, सामुदायिक सौहार्द आदि की शिक्षा मौखिक रूप से अनौपचारिक अभिक्रियाओं के माध्यम से प्राप्त होती है। इस मनोरंजक प्रक्रिया में

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संथाली देशज ज्ञान के अभिकल्प के रूप में लोकगीत एक सहज परंतु सक्षम परिपाटी के रूप में देखा जा सकता है। लोक संगीत आदिम जातियों में अलिखित एवं मौखिक होता है। यह एक पीढ़ी से दूसरी पीट्टी में हस्तान्तरित होता है। इन जनजातियों का जीवन लोक संगीत के बिना अधूरा है। इन जनजातियों में लोक संगीत का कार्यात्मक महत्व है। कोई भी कार्य का आरंग लोक संगीत से ही होता है। (सिंह, 2007) इन गीतों में अनेक प्रकार की विविधताएं पाई जाती है यथा शैलीगत विविधता, शिल्पगत विविधता, रचनागत विविधता, विषयगत विविधता, परिस्थितिगत विविधता तथा परिवेशन गत विविधता आदि शामिल है इस संदर्भ में संथाल जनजाति में प्रचलित विविध लोकगीतों को 9 आधारों में प्रमुखता से देखा जा सकता है जो निम्न तालिका द्वारा प्रत्यक्षित है।

तालिका-1 *संथाल जनजाति के विविध लोक गीत एवं संबंधित आयोजन*

क्रम. संख्या	**गीत (नाम)**	**गाए जाने वाले अवसर / आयोजन**	**गीत (सेरेङ) उदाहरण**
1	डाण्ठा गीत	ऐतिहासिक व मिथक आधारित नायक-नायिकाओं की वीरता तथा सामर्थ्य का शैर्यगान प्रस्तुत किया जाता है।	"धोरोम आखड़ा रे ओकोय तुमदाक् रुय बोयहा धोरोम आखड़ा रे ओकोयाक् लिपुर साडे बोयहा ओकोयाक् घुंगरा साडे ? धोरोम आखड़ा रे राम तुमदाक् रुय बोयहा लोखोन टामाके रुय"।
2	लागणे गीत	सभी अवसरों पर गाए जाने वाले गीतों में से एक लागणे को लागणे धुन में गया जाता है जो मुख्यतः मनोरंजन एवं प्रशिक्षण के गीत के रूप में गाया जाता है।	"दिन दो हजुक दिन दो चालाक् दिन दो हेच् रुअड़ोक् सिं बिन्दा नोंका गे हजुक् सेनोक्आ। रूप दो हजुक् रूप दो चालाक् रूप दो बाय रुअड़ा कासा पितल बां से सोना रूपा बां से रूप दो हुनं दुल रुअड़ोक् आ"।
3	डाहार गीत	फागुन माह में प्राकृतिक रमणीयता को उजागर करती हुए ऐतिहासिक व प्राकृतिक संदर्भों के विशिष्टता को नव युवतियाँ शाम के समय गाँव के आँगन में इकठ्ठा होकर गीत व	"बाहा बोंगा हों सेटेरेना जोतो बाहा गे बाहायेना बाहा थोपे रे कुयली कुहुय् सेरेंञ आतु कुलही आखड़ा रे कुयली कुहुय्

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

		नृत्य द्वारा व्यक्त करती है।	सेरेंञ"।
4	वीर सेरेङ गीत	शिकार के लिए जंगल में जाने पर युवक-युवतियों द्वारा यह गीत गया जाता है जिसमें सामान्यतः प्रेम और वासना प्रकट किया जाता है।	"हिंसी, डुमनी, छीता, कापरा, दे देला से, दे. देला से हिजुक् पे। आपे लागिद् ते आयनोम-काजोल, आपे लागिद् ते सुनुम-सिंदूर दो, दे देला से, दे देला से हिजुक् पे"।
5	सोहराय गीत	सोहराय पर्व के समय गाए जाने वाला गीत है जो सोहराय धुन पर गया जाता है। इसमें पांच दिनों में अलग अलग विधानों पर अलग अलग गीत गाये जाते है।	"ने सुगी, आम सुगीते शाय सुगी आम हेवेलेको होपोन लेकोदो आयूर आगू सुतुक् आगू निया गोड़ा निया जातरा पेरेज काक् चोड़ाङ काक् मे ने रांगिया, आम रांगियाते शाय रांगिया आम आयूर लेको सुतुक् लेको दो निया गोड़ा निया जातरा पेरेज काक् चोड़ाङ काक् मे"।
6	बाहा गीत	बसंत ऋतु के आगमन के उपलक्ष में बाहा पर्व के समय देवी देवताओं को प्रसन्न करने हेतु जाहेर थान और नायके के घर पर गाया जाता हैं जिसे युवक युवतियां दोनों मिलकर गाते हैं।	"जा गोसाँय तेहेञ दो नायके दो तोका घाट तोका नालारे नुमेना हो बाहा बाहा गे सो काना जा गोसाँय तेहेञ दो बयुद तोका घाट तोका नाला रे नाड़का एना हो बाहा बाहा गे सो काना जा गोसाँय तेहेञ दो नायके दो रोल घाट रोल नाला रे नुम एना हो बाहा बाहा गे सो काना जा गोसाँय तेहेञ दो बुयुद मेराल घाट मेराल नाला रे नाड़का एना हो, बाहा बाहा गे सो काना जा गोसाँय तेहेञ दो बुयुद चेतेते चेते तेदोय नाड़का एना हो बाहा बाहागेय सो

			कानाजा गोसाँय तेहेञ दो नायनेद तोवा तेदोयनुम एना हो बाहा बाहा गेय सो कानाजा गोसाँय तेहेज दो बुयुद दाहेते दाहेतेदोयनाड़का एना हो बाहा बाहागेय सो काना"।
7	करम गीत	करम डाल के चारों तरफ नाचते हुए यह गीत गया जाता है इसमें अपने देवता करम को प्रसन्न करने के लिए रात भर गीतों की प्रस्तुति की जाती है।	"तोका रेदोम जानाम लेना, कारामे गोसाँय हो ?तोका रेदोम बुसड़ लेना नेवा हारी डार ?सिं बीर रेम जानाम लेना कारामे गोसाँय हो,मान बीर रेम बुसड़ लेना नेव हारी डार"।
8	दासांय गीत	दासांय गीत दशहरा के समय दासांय धुन में गया जाता है। इसे मुख्यतः देवी देवताओं की पूजा के समय गया जाता है।	"हाय रे हाय, दिबि रे दुर्गा दोकिन ओडोकेनारे आयनोम काजोल दोकिन बाहेरेनारे।हाय रे हाय, चेते लागिन दोकिन ओडोकेनारे चेते लागिन दोकिन बाहेरेनारे ?हाय रे हाय, देश लागिद दोकिन ओडोकेनारे दिशोम लागिन दोकिन बाहेरेनारे।हाय रे हाय, सुनुम सिंदुर गुरुह देसे आणगोयमे खाड़ीखूंटी गुरुह दिशा आबोनमे हाय रे हाय,दिबि दुर्गा दोकिन सेटेर गोदोः मा आयनोमकाजोल दोकिन ओपेल गोदो:मा हायरे हाय,ओटांग् हिजुः पेसे सेरमा सांगिं खोन गुरलऊहिजू: पेसे सोरोग पाताल खोन ! हाय रे

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

			हाय, ओत मा दिसोम रे मा भुअं साडेकान आयनोम काजोल लागिद कांसा राँव - राँव कान। हाय रे हाय देला से दिबि दुर्गा आणगो हिजू:बिन देलासे आयनोम काजोल ओपेल गोदोक् बिन"।
9	डान गीत	छठियार, विवाह और मृत्यु आदि संस्कारों को मनाने के अवसर पर यह गीत गया जाता है इसमें साधारणतः प्रेम, श्रृंगार व सौंदर्य तथा शोक के भाव को प्रकट किया जाता है।	"चांदो सुरुः जमूनी कुनामी येन नेंडा सुरुजमूनी सेटेरेन ताम तेहेञ जिन्दा दोले सुनुम शाशां मेया गापा सिंगाड़ रेले बिदाय मेया चिरु नांगार रे दो जानाम सुरुज मुनी चांपा नांगार रे नाम दो रानी"।

श्रोत- क्षेत्रीय शोध कार्य 2024

(पाण्डेय, 2002; श्रीवास्तव, अवस्थी एवं अन्य, 2020; मुर्मू, 2023)

उपरोक्त तालिका में संथाली लोकगीतों को उनके विषय और प्रस्तुति के आधार पर विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया गया है जिसमें संथाली जन इतिहास, पर्व-त्योहार, दैनिक कर्म, धार्मिक रीति-रिवाज, जीवन संस्कार, मनोरंजन एवं सांस्कृतिक प्रशिक्षण आदि क्षेत्रों पर विविध गीतों का सृजन व संकलन किया गया है। संथालों द्वारा विभिन्न त्योहारों को मनाया जाता है। इन त्योहारों पर वे कई प्रकार के गीत गाते हैं। त्योहारों के अलावा ऋतु परिवर्तन, विवाह, फसल बोने एवं काटने, शुभ एवं शोक के अवसरों पर भी गीत गाए जाते हैं। प्रत्येक अवसर के लिए संथाल अलग-अलग धुन बजाते एवं गीत गाते है। (श्रीवास्तव, अवस्थी एवं अन्य, 2020)

संथाल समुदाय में उपलब्ध जितने भी लोकगीत हैं, वह सब प्राचीन परंपराओं से जुड़ा हुआ है। इसके परवर्ती पर्याय के लोकगीत में 'दासाँय', 'डांटा', 'गाड़ी/गाणी आसेन', 'झारनी मांतार', 'जातुर', 'रिन्जा', 'झीका', 'पाता' और 'एनेज् जों सेंरेंज' आदि को सम्मिलित किया गया (मुर्मू, 2023) । अधिकांश संथाली गीतों के साथ नृत्य जुड़ा रहता है। प्रत्येक पद्य रूप में अपने में गुढ़ भाव को छिपाये रहते हैं। संथाल समूह गान के रूप में प्रस्तुत करते हैं। संथाल समुदास में गीत, धुन और नृत्य के नौ प्रकार व्यवहार में देखे जाते हैं। (पाण्डेय, 2002) संथाल समुदाय में गीत के साथ धुन और ताल की विशेष महता है जिसके समेकित मेल होने से नृत्य का भाव जागृत होता है तब इस प्रक्रिया द्वारा संगीत की निर्मिती होती है। अलग विषय के लिए लग धुन और ताल जैसे- लांगड़े धुन, डान धुन, दासाय धुन, सोहराय धुन, करम धुन आदि द्वारा नृत्य का परिवेशन किया जाता है जिसमें सभी सहभागिता करते है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

यह कार्य सामाजिक, सांस्कृतिक रूप से अपनी दैनिक संभावित पर आधारित होती है जिसमें पुरुष वर्ग एवं महिला वर्ग दोनो की विशेष भूमिका होती है।

चित्रकला :

भारतीय चित्रकला का इतिहास बहुत प्राचीन है। यह उतना ही प्राचीन है जितना प्राचीन मानव इतिहास है। मनुष्य जब से अपने आस-पास के परिवेश से परिचित हुआ, तब से वह अपनी आदिम प्रवृत्तियों को किसी न किसी माध्यम से अभिव्यक्त करने लगा (डुंगडुंग, 2024)। संथाल जनजाति में चित्रकला उनकी प्राकृतिक सक्षमता एवं उनके प्रति उनकी आस्था का परिणाम है जिसमें शुभ की आकांक्षा, जीवन इतिहास की प्रमुख घटनाएं, जीवन उल्लास तथा सीखने के विविध संदर्भों को मुख्यतः से प्रस्तुत किया जाता है। इन चित्रों के निर्माण में प्रयुक्त संसाधनों व रंगो का निर्माण भी वे स्वयं ही जातीय ज्ञान के आधार पर करते है। जिसका अपना प्राकृतिक आधार एवं प्रतीक होता है। इस कार्य में महिलाएं मुख्य भूमिका निभाती है, चाहे वह संसाधनों को इकट्ठा करना हो या चित्र के लिए स्थान का निर्धारण व निर्माण। ये चित्र मुख्यतः विशेष अवसरों जैसे- पूजा, पर्व-त्योहार तथा जीवन संस्कारों के आयोजन के अवसर पर बनाया जाता है।इस विषय में डुंगडुंग (2024) का कहना है कि "आदिवासी समाज की चित्रकला सामान्य है। आदिवासियों में संताल समाज इस क्षेत्र में श्रेष्ठ है। उनके घरों की लिपाई - पोताई और कलात्मक चित्र अति प्रशंसनीय है। उनकी चित्रकारिता सर्जनात्मक और अति मनोरंजक है। उनकी चित्रकारी की अपनी विशेषता है। उनकी कलाकृति को देखन से उर में आनंद और मन में प्रसन्नता उत्सन्न होती है"। संथाल अपनी चित्रकारी एवं साज-सज्जा के लिए प्राकृतिक रुप से उपलब्ध संसाधन द्वारा रंगो का निर्माण स्वंय द्वारा विकसित पद्धति से करते है जिसमें इनकी सामुदायिक भूमिका अहम होती है। इनके समुदाय में प्रत्येक रंग का विषेश महत्व है जो इनकी परंपरा और आध्यात्मिक मान्यताओं से जुड़ा है। इनके द्वारा निर्मित व्यवहारिक रंगो एवं उनके प्रतीकों को निम्न रूप में समझा जा सकता है-

तालिका-1 : प्राकृतिक रंगों के स्रोत एवं प्रतीक

क्रं.संख्या.	रंग	स्रोत	प्रतीक
1	लाल	लाल मिट्टी (गेरू) और पलाश फूल	उर्वरता, शक्ति और धार्मिक उत्सव
2	सफेद	चूना पत्थर और खड़िया मिट्टी	पवित्रता और शांति
3	काला	कोयला और राख	बुराई से बचाव और गहराई (रहस्य)
4	हरा	पान पत्ता, नीम पत्ता और जड़ी बूटियां	जीवन, प्रकृति और पुनर्जन्म
5	पीला	हल्दी और कनेल के फूल	समृद्धि और प्रकाश (चेतना)
6	भूरा	खनिज पत्थर	अपनेपन और परंपरा
7	नारंगी	नारंगी गेंदे के फूल	सूर्य (तेज) और संधर्ष

श्रोत- क्षेत्रीय शोध कार्य 2024
(यादव एवं सिंह, 2019)

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संथाल जनजाति में दैनिक क्रियाकलापों में रंग निर्माण हेतु आवश्यक सामग्री का एकत्रीकरण सतत रूप में वर्षभर चलता रहता है जिसमें मौसम के सापेक्ष रंग सामग्री का एकत्रण एवं रंग निर्माण किया जाता है जो पूर्णतया पारंपरिक व प्राकृतिक पद्धति द्वारा संपन्न होता है-

तालिका-2 : संथाल जनजाति में पारंपरिक रंग निर्माण की प्रक्रिया

मौसम (समय)	श्रोत संग्रहण	पारम्परिक विधि	रंग
वसंत ऋतु (फरवरी-मार्च)	पलाश के फूल (जंगल से संग्रहित)	एकत्रित फूलों को सुखाकर पीस लिया जाता है फिर गोंद (निश्चित मात्रा), पानी और पिसे हुए फूलों के चूर को मिलकर रंग तैयार किया जाता है।	नारंगी रंग
	महुआ के फूल (जंगल से संग्रहित)	संग्रहित फूलों को सुखाकर पीसकर गोंद एवं पानी मिलाकर (निश्चित मात्रा) रंग तैयार किया जाता है।	हल्का पीला रंग
	गेंदे के फूल (आसपास एवं खतों से संग्रहित)	संग्रहित फूलों को सुखाकर पीसकर गोंद एवं गर्म पानी मिलाकर (निश्चित मात्रा) रंग तैयार किया जाता है।	सुनहरा पीला रंग एवं नारंगी रंग
ग्रीष्म ऋतु (अप्रैल-जून)	लकड़ी की राख (जंगल से संग्रहित)	इस समय कई प्रकार की सूखी लकड़ियों को संग्रहित कर उससे राख तैयार किया जाता है फिर आवश्यकता अनुसार उसमें गोंद एवं पानी(ठंडा/गर्म) (निश्चित मात्रा में)मिलाकर रंग तैयार किया जाता है।	भूरा रंग एवं काला रंग
	मिट्टी और खनिज (पहाड़ों और नदियों के किनारो से संग्रहित)	सूखी मिट्टी और खनिज पत्थरों को रंग के आधार पर एकत्रित किया जाता है। लाल मिट्टी (गेरू) और सफेद मिट्टी (खड़िया) को महीनता और उसमें नमी की मात्रा को देखकर उच्च गुणवत्ता वाली मिट्टी को ही संग्रहित कर सुखाया व शुद्ध (साफ) किया जाता है फिर उसमें गोंद और पानी (निश्चित मात्रा में) मिलाकर रंग बनाया जाता है।	लाल रंग एवं सफेद रंग
		खनिज पत्थरों को भी रंग के आधार पर (काले एवं भूरे) चुना जाता है फिर उनकी कठोरता व रंग के अंश का मूल्यांकन कर उन्हें बारिक चुरा बनाया जाता है तथा उसमें गोंद और आवश्यक पानी मिलाकर रंग बनाया जाता है।	भूरा रंग एवं काला रंग
वर्षा ऋतु	नीम, पान और मेहंदी	इस समय पत्तियों में नमी अधिक होती हैं जो रंग	हल्का हरा रंग,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

(जुलाई-सितंबर)	की पत्तियां (आसपास एवं जंगल से संग्रहित)	को गहरा बनाने के लिए अच्छा होता है जिससे इनको संग्रहित कर सुरक्षित कर लिया जाता है। फिर उन्हें सुखाकर चूर्ण बनाने के लिए पीस लिया जाता है उसमें गोंद और पानी (निश्चित मात्रा में) मिलाकर रंग बनाया जाता है।	गहरा हरा रंग एवं कसैला (मटमैला) रंग
	पानी के स्रोतों का निर्माण एवं संग्रह (पहाड़ों पत्थरों एवं घरों के नजदीक निर्माण)	पानी रंगों के निर्माण के लिए आवश्यक संसाधन है जिसके संग्रह के लिए पहाड़ एवं चट्टानों की दरारों पर बड़े गड्ढे बनाए जाते हैं जिससे पानी का संग्रह इस समय किया जा सके जिसका वर्ष भर आवश्यकता अनुसार जल की आपूर्ति के लिए उपयोग किया जाता है।	
शरद ऋतु (अक्टूबर-नवंबर)	हल्दी की जड़ (बाड़ी से उत्पाद के रूप में संग्रहित)	इस समय हल्दी की जड़े परिपक्व होती हैं इन्हें मिट्टी से निकलकर अच्छे से साफ कर पीस लिया जाता है फिर इसके पिसे हुए मिश्रण को सुखाकर चूर्ण बनाया जाता है जिसमें गंद और पानी (निश्चित मात्रा में) मिलाकर रंग तैयार किया जाता है।	पीला रंग
	फूलों और पत्तियों का संरक्षण (जंगल एवं आसपास की जगह से संग्रहित)	इस समय उपलब्ध फूलों जैसे गेंदा तथा पुटुस, पत्तों में पान आदि को संग्रहित कर शुष्क धूप में सुखाकर संग्रहित किया जाता है। यही प्रक्रिया पत्तियों के साथ भी अपनाई जाती है। फिर इनका चूर्ण बनाकर आवश्यक गोंद, पानी आदि मिलाकर रंग तैयार किया जाता है।	
शीत ऋतु (दिसंबर-जनवरी)	गोंद और जड़ी बूटियां का संरक्षण (जंगल एवं पहाड़ों से संग्रहित)	रंगों को स्थिरता प्रदान करने के लिए यह आवश्यक संसाधन होते हैं जिसका संग्रहण इस समय किया जाता है। इनका अपना कोई रंग नहीं होता जिससे रंगों पर इनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता यह रंगों को लंबे समय तक स्थायित्व प्रदान करने के लिए आवश्यक संसाधन होते हैं।	कोई रंग नहीं (बगैर रंगों वाला)
	प्राकृतिक खनिज का संरक्षण (पहाड़ों एवं पठारो से संग्रहित)	इस समय चुना पत्थर कोयला तथा अन्य खनिज अधिक सघन होते हैं तथा तापमान भी काम रहता है जिससे इनका संग्रहण इस समय आसानी से अधिक मात्रा में करना संभव होता है।	

श्रोत- क्षेत्रीय शोध कार्य 2024
(यादव एवं सिंह, 2019)

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उपरोक्त तालिका में संथाली जनजाति में रंग निर्माण की प्रक्रिया को स्रोत संग्रह, पारंपरिक विधि आदि के आधार पर विभिन्न श्रेणियों में विभाजित कर प्रदर्शित किया गया है जिसमें रंग निर्माण की ऋतु आधारित प्रक्रियायें को संदर्भित किया गया है।

संथाल जनजाति में चित्रकला के स्वरूप को हम मुख्यतः तीन भागो में देख सकते है-

भित्तिचित्र -

भित्तिचित्र मुख्य रूप से गृहसज्जा के मनोरंजन के अलावे पूजा पर्वो में देवी-देवताओं की अराधना तथा अशुभ शक्तियों की शांति के उद्देश्य से मुख्य रूप से बनाया जाता है। इस संदर्भ में गुप्ता (2011) का कहना है कि "इन आदिम शैली के भित्तिचित्रों में पशु-आखेट, परस्पर युद्ध के अलावा पूजा आकृतियों के चित्र हुआ करते थे। इस प्रकार के भित्तिचित्रों का उदगम भारत में नव पाषाण युग से माना जाता है"। संथाल समुदाय में रचनात्मक कुशलता का ये एक उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करता है जो प्रया सभी घरों में एक सामान्य प्रक्रिया के रूप में दैनिक जीवन में अपनाया जाता है। भित्तिचित्र दीवारों पर उनके गृह शोभा को और भी बढ़ा देते हैं। रंगाई का कार्य नींव के नीचे हासिया में कई रंगों से रंगे जाते हैं। नींव के उपर अत्यंत आकर्षक रूप में कही मयूर कहीं हाथ में फूल लिए झुकी महिला के चित्रो को विभिन्न रंगों से सजीव बनाने की कोशिश दिखायी देती है। यह सब कुछ आधुनिक ब्रश और आधुनिक रंगों के प्रयोग से नहीं बल्कि उंगली या स्वहाथ से निर्मित बांस के कूचों से संपन्न किए जाते है। इनके प्रति वे इतने सचेत है कि कभी इसके रंग को धूमिल नहीं होने देते। (पाण्डेय, 2002)

पटचित्र -

पटचित्र संथाल जनजाति की पारंपरिक व प्राचीन चित्रशैली है बिसे जादोवरिया के नाम से जाना जाता है। "यह चित्र कपड़े पर और कभी-कभी चमड़े पर बनाए जाते थे, पट का शाब्दिक अर्थ है कपड़ा। इससे यह कहा जा सकता है कि यह चित्र प्राय: कपड़ों पर बनाए जाते थे। आधुनिक युग में भी हम कपड़ों पर बने विविध सुंदर चित्रों का प्रयोग कमरों की सजावट के लिए करते हैं"(गुप्ता, 2011)। इसमें संथाल समुदाय के कलाकारों द्वारा कहानियों को प्रदर्शित करने के अनोखे अंदाज में चित्रों को प्रस्तुत किया जाता था। इसमें एतिहासिक घटनाओं का वर्णन, जीवन के उत्सव तथा प्राकृतिक स्वरूपों जैसे पहाड़, पेड़-पौधे, लताएं, जीव-जन्तु व मनुष्य (हाड़) का चित्रण किया जाता है। ये शैली आज के समय में प्रयः लुप्तप्राय हो गई है जो अब आंशिक रूपों में कहीं-कही परिवारों में सुरक्षित करने हेतु संघर्षरत है। भारत में संथाल और भूमिज जनजाति की एक पारंपरिक पारंपरिक लोग चित्रकला शैली है, जो इस समाज के इतिहास और दर्शन को पूर्णतः अभिव्यक्त करने की क्षमता रखती है। यह कला इनके मिथकों, सांस्कृतिक व्यवहार, परंपरा और पर्व-त्योहारों पर आधारित है। (चैटर्जी, 1983)

भूमिचित्र –

भूमिचित्र संथाल जनजाति में एक प्रचलित कला प्रतिरूपों की अभिव्यक्ति के रूप में प्रचलित है जिसे आलपोना के नाम से जाना जाता है। इसमें चावल को पीसका सफेद रंग से विविध चित्रों जैसे- फूल, पत्ते, पक्षी तथा जीव-जन्तुओं एवं मनुष्यों का प्रतीकात्मक चित्र प्रस्तुत किया जाता है। इसे मुख्यतः पारंपरिक त्योहारों के अवसर, पूजा

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्थलों एवं घर के आंगन व पूजा कमरे में बनाया जाता है इसका कोई निश्चित स्वरूप निद्यर्धारित नहीं होता बल्कि संथाली लेग अपने-अपने आवश्यकता व रचनात्मकता के अनुरूप तैयार करते है।

हस्तशिल्प (चित्रफलक) :

हस्तशिल्प संथाल समुदाय द्वारा निर्मित एक महत्वपूर्ण और दुलर्भ कला का स्वरूप है जिसे वे मुख्यतः किसी बस्तु जैसे बांस, लकड़ी, मिट्टी आदि पर तैयार करते है। गुप्ता (2011) के अनुसार "जो चित्र लकड़ी, मिट्टी, कीमती पत्थरो, हाथीदांत, लोहा, पितल, तांम्बा आदि के धातु फलकों पर जो चित्र बनाये जाते थे इन्हें चित्रफलक कहते है"।इस कलारूप में भी मुख्यतः धार्मिक संदेशों एवं प्रकृति रूपों के प्रतिकात्मक योगदान का प्रदर्शन किया जाता है। संथाल लोग विवाह संस्कार को बहुत अधिक महत्व देते है, विशेषकर वर-वधू को ले जानेताली पालकियों पर । इन पालकियों पर बहुत सुंदर नक्काशी अथवा अधिकांशतः नक्काशी के समान लकड़ी पा खुदाई की जाती है। इस कार्य के लिए बसूला या दाओं का उपयोग किया जाता है। इनकी नक्काशी विवाह संबंधी प्रेम और आनंद की प्रतीक होती है और इसका उद्देश्य संतानोत्पत्ति की क्षमता की भावना का वातावरण तैयार करना होता है। इसमें पुरुषों तथा स्त्रियों और पशुओं के पारस्परिक सम्मिलन के चित्र होते है। संतानोत्पत्ति की क्षमता के प्रतीक स्वरूप गायो के साथ बछड़े, चिड़ियों के साथ बच्चे और स्त्रियों के स्तनों से चिपटे हुए बच्चो की आतियां होती है। ये लोग गर्भवती स्त्रियों के भी चित्र बनाते है। इनका सारा प्रयत्न पालकी और विवाह को अधिक से अधिक मंगल दायक बनाने का होता है। (एनविन, 2017)

संथाल समुदाय में विविध संसाधनों को उपयोगिता के आधार पर निर्माण किया जाता है जिसमें संथाल अपनी कलात्मकता का विशेष प्रयोग करते हुए उसे सुंदर एवं आकर्षक बनाते हैं। संथाल जनजाति की हस्तकला के संबंध में पाण्डेय (2002) का कहना है कि "सर्वेक्षण के दौरान उनकी कलात्मक अभिव्यक्ति के पीछे जो महत्वपूर्ण सत्य देखने को मिला उनमें से प्रथम तो यह कि उनकी कला को देखकर यह सहज भाव होता है कि इनमें उच्च कोटि के कला के गुण छुपे हुए हैं। द्वितीय यह कि उनकी कला आवश्यकतापारक और अविष्कारपारक दोनों है। जब जैसी आवश्यकता हुई उस तरह की कला को विकसित करने का प्रयास किया गया। बढ़ई का काम वे स्वयं कर लेते हैं, लोहार का कार्य भी आंशिक रूप से स्वयं ही संपन्न कर लेते हैं। तीसरी विशेषता यह कि ये अपनी कला की अभिव्यक्ति में कृत्रिम साधनो का प्रयोग नहीं करते। ताड़ के पत्ते को सुखाकर वे चटाई बनाते हैं और आने-बाने को इस प्रकार व्यवस्थित करते हैं कि उसकी हर पट्टी अपने स्थान विशेष पर बनी रहती है और उसके धरातल पर एक से एक आकर्षक चित्र बनाते हैं इसी प्रकार गेहूं की सूखी कुंडी से घर की सफाई हेतु घर की महिलाएं झाड़ू बनती हैं। धान के पुआल से लगभग 6 इंच ऊंचाई का एक गोल मोढ़ बनाते हैं जो आगंतुकों को प्रतिष्ठापूर्वक बैठाने के लिए प्रयुक्त होती है। घर की महिलाएं अत्यंत उत्तम कोटि के डलिया का निर्माण खर-पतवार से तैयार करती हैं जिसकी कला देखते ही बनती है"। संथाल समुदाय में विविध प्रकार के वस्तुओं का निर्माण कलात्मक रूप से करते हैं जिसमें वनों से संग्रहित पलाश के फूलों से दोना-प्लेट, झुरगुंडा घास से झाड़ू तथा टोकरी का निर्माण, जंगली बेल एवं पाट को काटकर सुखाकर पतले रेशों को पगाकर रस्सी बनाकर खटिया, कुर्सी आदि का निर्माण, बेंत (जंगली लत) को आंग में पकाकर कुर्सी, बेती (बड़ी टोकरी) मेंज आदि का निर्माण, खजूर के पत्ते से झाड़ू तथा छत को छाने तथा दीवारों के रूप में दलमा का सुंदर डिजाइन बनाना, जंगल की लकडिय़ों से घर, बाड़ा, शिकार के लिए हथियार तथा कृषि व मजदूरी के लिए सहायक औजारों-उपकरणों का निर्माण, बांस से गृह उपयोगी वस्तुएं जैसे टोकरी, चलना, फूलदान, सुप, सीढ़ी आदि का निर्माण, मिट्टी से विभिन्न बर्तन, खिलौने, ईट गारा आदि का

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

निर्माण, जानवरों के चमड़े से विविध प्रकार के वाद्य यंत्र, औजार (गुलेल) का निर्माण, फसलों को एकत्रित कर विशेष ढंग से सजा कर रखना ताड़ के पत्तों को सुखाकर चटाई पंखा तथा अटक बनाना, धान की बालियों से बैठने के आसान (मोढ़ा) तथा गृह सज्जा के लिए धान की बालियों को गूंथकर सुंदर पैटर्न बनाया जाता है इतना ही नहीं संथाली महिलाएं कुशल कलाकार होने के साथ-साथ कुशल श्रमिक भी होते हैं वे अपने घरों तथा आसपास के परिवेश को अलग-अलग सामग्री द्वारा वर्ष भर पर्व त्योहार में स्वयं सजाते हैं जिसमें लिपाई-पुताई, रंगाई, सफाई आदि प्रमुखता से देखा जा सकता है।

वास्तुकला :

संथाल जनजाति में वास्तुकला के प्राचीन एवं आधुनिक संदर्भ दोनों ही मौजूद है परंतु अधिकता प्राचीन परिपाटी की है जिसमें ग्रामीण स्वरूप, रास्तों की व्यवस्था, कृषि संसाधनों के रख रखाव के लिए सुरक्षित व्यक्तिगत व सामाजिक स्थान, जाहेरथान, पशुपालन हेतु सम्यक स्थान, सामुदायिक स्थल, माझीथान आदि संभावनाओं की संपुर्ती हेतु उपयुक्त संरचना देखने को मिलती है वही आधुनिक प्रभावयुक्त संरचना में नवीन संदर्भ जुड़ने पर भी प्राचीन संदर्भ के स्रोत एवं साधन उपलब्ध है। वास्तुकला के दृष्टिकोण से दो प्रमुख आधार परिलक्षित होते है-

ग्राम निर्माण-

इसके लिए संथाल समुदाय में अनुभवी व्यक्ति या समूह कुछ महत्वपूर्ण संसाधनों एवं मानकों की पड़ताल करसुनिश्चित करते हैं कि ग्राम की व्यवस्थापना उस स्थान पर उचित है जिस हेतु स्थान की भौगोलिक पृष्ठभूमि, मृदा तत्व की उर्वरता, प्राकृतिक संवृद्धता, संसाधन सुलभता, जल स्रोतों व शुद्धता एवं उचित वातावरण आदि सभी संदर्भ में वैज्ञानिक रूप से जांच परख लेने के बाद ही ग्राम की सृष्टि संभव होती है। "संथाल बस्तियां साधारणता ऐसे स्थान में है जहां किसी प्राकृतिक जलाशय का सुपाष हो गली के छोर पर अलग-अलग परिवार के लिए अलग-अलग खलिहान की जगहें भी निर्धारित रहती हैं जहां धान पीटनेके लिए छोटी बड़ी चट्टानें भी गाड़ी रहती है" (झा, 1993)| ये निर्दिष्ट मानक उनके पारंपरिक दृष्टिकोण का ही प्रतिफल होता है।

गृह निर्माण-

संथाल जनजाति में लोग अपने घरों को अपने पूर्वजों द्वारा संरक्षित मानते हैं जिससे वह घरों के निर्माण एवं रखरखाव में विधिवत नियमों का पालन करते हैं सभी घरों के निर्माण लगभग एक सी पद्धति से होती है "मिट्टी की दीवारों और पूस के छप्पर वाले संस्थालों के छोटे-छोटे घर साधारणता लंबाई में 15-20 हाथ तक चौड़ाई में 10-12 हाथ और ऊंचाई में 5-6 से 10-12 हाथ तक होते हैं इनकी छते मुख्यतः दो चला होती हैं जिसमें ओलती के नीचे दीवारों से सटे हुए डेढ़ से दो हाथ लंबे और एक से डेढ़ हाथ चौड़े पिंडा यानि ओसारे भी प्रत्येक संथाल घर के अनिवार्य अंग है" (झा, 1993)| अन्य समुदायों की तरह संथालों में भी घरों के निर्माण वे स्वयं ही करते हैं इसमें आवश्यक सामग्री भी अधिकांशतः प्राकृतिक रूप से संग्रहित करते हैं तथा घर निर्माण की पद्धति उनकी अपनी जातिगत विरासत है जिसका स्वरूप पीढ़ियों से यूं ही बना हुआ है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

निष्कर्ष

संथाल जनजाति भारत की सबसे प्रमुख और प्राचीन आदिवासी जनजातियों में से एक है, जो अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान, समृद्ध परंपराओं, कलात्मक अभिव्यक्तियों तथा प्राकृतिक जीवन शैली के लिए जानी जाती है। उनकी सांस्कृतिक और सामाजिक संरचना भारत के आदिवासी समाज का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करती है। संथाल जनजाति की पारंपरिक कलाएँ उनकी संस्कृति, जीवनशैली, और धार्मिक विश्वासों का गहन प्रतिबिंब हैं। उनकी कला और सांस्कृतिक परंपराएँ न केवल मनोरंजन का माध्यम हैं, बल्कि उनके सामूहिक जीवन, प्रकृति के साथ उनके गहरे जुड़ाव, और पारंपरिक ज्ञान का सजीव उदाहरण भी हैं। यह लेख संथाल कला और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं की चर्चा करता है, जिसमें उनके त्योहार, अनुष्ठान, धार्मिक गतिविधियाँ, और पारंपरिक नृत्य-संगीत शामिल है।

संथाल जनजाति मुख्यतः झारखंड के छोटानागपुर पठार क्षेत्र और उसके आसपास के इलाकों में निवास करती है। इनके गाँव हरे-भरे जंगलों और पहाड़ों के बीच स्थित होते हैं, जो उनकी संस्कृति और कला के प्रेरणा स्रोत हैं। संथाल जनजाति की संस्कृति उनके दैनिक जीवन, त्योहारों, अनुष्ठानों, और कलाओं में स्पष्ट रूप से झलकती है। इनके लोकगीत, नृत्य, और चित्रकला केवल सौंदर्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं हैं, बल्कि वे इनके सामाजिक और धार्मिक जीवन के प्रतीक भी हैं। संथाल जनजाति का इतिहास गहराई से प्रकृति, पारंपरिक जीवनशैली, और सामूहिकता से जुड़ा हुआ है। यह जनजाति अपने पारंपरिक गीत, नृत्य, और हस्तशिल्प के लिए प्रसिद्ध है। संथाल समुदाय अपनी सरलता, सामूहिकता, और प्रकृति के प्रति श्रद्धा के कारण भारतीय समाज में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। संथाल जनजाति की कला और संस्कृति में उनकी लोक परंपराओं, धार्मिक विश्वासों, और प्रकृति प्रेम की गहरी झलक मिलती है। आधुनिकता और शहरीकरण के बढ़ते प्रभाव के बावजूद, यह आवश्यक है कि उनकी कला और संस्कृति को संरक्षित किया जाए ताकि यह अमूल्य धरोहर आने वाली पीढ़ियों तक पहुँच सके। संथाल जनजाति की कलाएँ भारतीय लोकसंस्कृति का एक अनमोल हिस्सा हैं, जो हमारी सांस्कृतिक विविधता और समृद्धि को सशक्त बनाती हैं।

जनजातीय कलाएं वे कला रूप हैं जिसका सृजन विशिष्ट भौगोलिक परिस्थितियों में रहते हुए जनजातीय समुदायों द्वारा अपने पीढ़ीगत अनुभव और सामुदायिक आवश्यकताओं के सापेक्ष अपनी कल्पना एवं जीवन दृष्टि की व्याख्या के मध्यम स्वरूप में हुआ। ये कलाएं उनके जीवन के एक वर्ग के रूप में सृजित होकर पीढियों से व्यवहृत व परीक्षित होकर अपने मूल रूपों में आमूल चूल परिवर्तन के साथ अपने आदिम स्वरूप को बनाने में सक्षम रही है जिसमें उनके इतिहास, संघर्ष व जिजीविषा की झांकियां परिलक्षित होती है। ये कलाएं जितनी व्यक्तिक व सामुदायिक है उतनी ही क्षेत्रीय, प्रांतीय एवं राष्ट्रीय (भारतीय) भी है जिसका सृजन हजारों वर्षों में विभिन्न समुदायों में विभिन्न प्रयत्नों द्वारा हुआ है (सिंह, 2007)। भारत की लोक एवं जनजातीय कलाएं जितनी पारंपरिक और साधारण है उतनी ही सजीव और प्रभावशाली भी। आधुनिक कला से हटकर जनजातीय कला की विविधताओं पर नजर डाले तो रचनाशीलता, कलात्मक अभिव्यक्ति एवं पारंपरिकता का अनोखा संगम देखने को मिलता है। यह जनजातीय कलाएं समाज की प्रमुख धारा से अलग संस्कृति के पैमानों पर बेहद संपन्न नजर आती है, इसलिए यह कहना गलत ना होगा कि कला और संस्कृति के मामले में यह समुदाय आधुनिक प्रगतिशील समाज की अपेक्षा पहले से कम विकसित नहीं रहे हैं। (पाण्डेय, 2002)

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संदर्भ सूची :

- अटल, वाई. एवं सिसोदिया, वाई. (2011). *आदिवासी भारत एक सामाजिक सांस्कृतिक एवं विकासात्मक विवेचन*. शवत प्रकाशन.
- अरापन (2020). *झारखंड की संथाल जनजाति का सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास **1850** से 1950 ईस्वी तक एक ऐतिहासिक विश्लेषण*. (डॉक्टोरल थिसिस, पटना विश्वविद्यालय). शोधगंगाइनफ्लिबनेट http://hdl.handle.net/10603/447515.
- अहमद, ए. (1985). *मिथिला के संथाल: उत्थान का समाजशास्त्रीय अध्ययन*, (डॉक्टोरल थिसिस, एल.एन.एम. विश्वविद्यालय, दरभंगा) शोधगंगाइनफ्लिबनेट https://hdl.handle.net/10603/502997.
- उप्रेती, एच. (1965). *भारतीय जनजातियां*, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर.
- कुमारी, आर. (2016). *संथाल: उनकी रचनात्मक उपलब्धि, आवश्यकता, आत्मधारणा तथा समस्याएं*. (डॉक्टोरल थिसिस, तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय). शोधगंगाइनफ्लिबनेट http://hdl.handle.net/10603/306218.
- कुमार, ए. (2023). बिहार के संथाल जनजातियों की कला परंपरा एवं संरक्षण की चुनौतियां. *वितस्ता*, (49), कश्मीर विश्वविद्यालय.
- चौहान, के. एवं चौहान, आर. (2005). *आदिवासी स्वर-4: सामाजिक आर्थिक जीवन*. स्वर्ण जयंती पब्लिकेशन. (संपादित)
- ज्योत्सना (2005). *संथाल जनजाति में राजनीतिक चेतना एक समाजशास्त्रीय अध्ययन*. (डॉक्टोरल थिसिस, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ). शोधगंगाइनफ्लिबनेट http://hdl.handle.net/10603/288261.
- झा, एम. (1993). *पूर्णिया के संथाल एक मानव शास्त्रीय एवं समाजशात्रीय अध्ययन*, (डॉक्टोरल थिसिस, एल. एन. एम. विश्वविद्यालय, दरभंगा) शोधगंगाइनफ्लिबनेट https://hdl.handle.net/10603/990285.
- टुडू, एम. सी. (2016). *संथाल जनजाति में देशज ज्ञान*, (डॉक्टोरल थिसिस, रांची विश्वविद्यालय, रांची) शोधगंगाइनफ्लिबनेट https://hdl.handle.net/10603/579466.
- दूवे, एस. (1960). *मानव और संस्कृति*, राजस्थान प्रकाशन दिल्ली
- पाण्डेय, पी. (2002). *जनपद माल्दा (प. बंगाल) के संथाल जनजाति का सामाजिक आर्थिक रूपांतरण*. (डॉक्टोरल थिसिस वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर) शोधगंगाइनफ्लिबनेट http://hdl.handle.net/10603/200925.
- भारत की प्रमुख जनजातियां- https://byjus.com>majorstribesofindiainhindi.

- मांझी परगना शासन व्यवस्था (संथाल जनजातियों की पारंपरिक शासन व्यवस्था) https://Careerfoundarition.org.in.
- यादव, के. एवं सिंह, ए. (2019). *संथाल आदिवासी के लोकगीत, लोक कथा एवं लोक चित्रों में समाज की प्राचीन विरासत और संस्कृति*, मुड़ई.
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020). मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार https://www.education.gov.in.
- वर्मा, यू. के. (2009). *झारखंड का जनजातीय समाज*, सुबोध ग्रंथावली, रांची.
- वर्मा, यूं.के. (2012). *भारत का जनजातीय समाज.* इंस्टिच्यूट फॉर सोशल डेवलपमेंट एंड रिसर्च. (संपादित)
- वर्मा, यू.के. (2015). *संथाल*, झारखंड सरकार कल्याण विभाग, झारखंड जनजातीय कल्याण शोध संस्थान मोराबादी, रांची. https://www.jharkhand.gov.in.
- विश्वास, पी. सी. (1956). *संताल ऑफ़ दि संताल परगना*, भारतीय आदिम जाति सेवक संघ, दिल्ली.
- विद्यार्थी, एल. पी. (1976). *दि ट्राइबल कल्चर आफ इंडिया*, कान्सेप्ट पब्लिकेशन कंपनी, दिल्ली.
- संस्कृति और विरासत/जिला पांकुड़, झारखंड सरकार भारत https://pakur.nie.in>caltuer-haritage.
- सिंह, के. एन. (2007). *संथाल परगना का जनजातीय भूगोल एक भौगालिक अध्ययन*, (डॉक्टोरल थिसिस, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर) शोधगंगाइनफ्लिबनेट https://hall.handle.net/10603/179133.
- शर्मा, ए. एवं अवस्थी, के.एस. (2016). भारत में अनुसूचित जनजाति की शिक्षा वर्तमान स्थिति और भावी आवश्यकताएं. *भारतीय आधुनिक शिक्षा,* (2). एनसीईआरटी https://ncert.nic.in/journals-and-pericals.php?in=hi.